बाबू श्री कन्हैयालाल गुप्त – कालेज और कृतित्व

–रामगोपाल गुप्त
प्रधानाचार्य / निदेशक
सुबटी देवी स्कूल, वृन्दावन

गान्धी विचारधारा के समर्थक श्वेत वस्त्रधारी, सत्य, अहिंसा के पुजारी, कांग्रेस कार्यकर्त्ता के रूप में मेरा प्रथम परिचय बाबू जी से उनके निवास पर हुआ। उस समय मैं उनके छोटे भाई हरेकृष्ण अग्रवाल के साथ प्राइमरी कक्षा का छात्र था। उनके पूज्य पिता स्व. भजनलाल जी पटवारी थे। अवकाश ग्रहण के बाद वृन्दावन आ गये थे। वृन्दावन में बनखन्डी पर उनकी बैठक अपनी दुकान पर थी, जहाँ हरेकृष्ण और मैं साथ–साथ उनके निवास पर अध्ययन किया करते थे। बाबूजी के सरल, सहज एवं आकर्षक व्यक्तित्व का प्रभाव हम दोनों पर पड़ा। बाबूजी का स्वभाव बादाम की तरह ऊपर से कठोर अन्दर से नरम था।

बाबू जी एम.एस.सी. करने के बाद वृन्दावन नगर पालिका हाईस्कूल में अध्यापक हो गये। कुछ समय बाद वह मथुरा कलेंसी हाईस्कूल में अध्यापन कार्य करने लगे। वहीं वे टी.बी. से ग्रसित हो गये। उनको इलाज के लिये पहाड़ों पर जाना पड़ा। तब आस–पास कोई टी.बी. अस्पताल नहीं था। विद्यालय प्रबन्धक समिति द्वारा उन्कें चिकित्सीय अवकाश के साथ उनके इलाज में पूर्ण सहयोग करना पड़ा इसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। क्रिश्चियन विद्यालय होनके के कारण उनका सम्पर्क अंग्रेजों से अधिक रहा। इस कारण उनका अंग्रेजी भाषा पर कमाण्ड हो गया। वह अपना अधिकांश कार्य अंग्रेजी में करने लगे। इलाज के

बाद वहीं आकर कार्य भार सम्भाला। वहीं रहकर वह विधान परिषद सदस्य बने और अध्यापक कल्याण में जुट गये। उनकी कार्यक्षमता गजब की थी। उनके पास फाइलों का ढेर लगा रहता था।

वह 12 वर्ष एम.एल.सी. रहे। उनकी वक्तृत्व कला की छाप स्व. चन्द्रभान गुप्ता, सम्पूर्णानन्द, कमलापति त्रिपाठी, आचार्य जुगल किशोर आदि पर विशेष रही। तथ्य पूर्ण एवं सत्य आंकड़ो को प्रस्तुत करना उनकी कुशलता का परिचालक था। विभागीय अधिकारी उनके इस कृत्य से थर–थर कांपते थे। जिला स्तर की बैठकों, गौष्ठियों में उन्हें विशेष सम्मान मिलता था। अध्यापकों के हित में वह अधिकारियों को आड़े हाथ लेते थे।

वृन्दावन जैसी सुरम्य भूमि में एक टी.बी. सैनेटोरियम स्थापित करने का उन्होंने स्वप्न देखा। सेठ हरगूलाल के वह सम्पर्क में आये। ''ब्रज सेवा समिति'' की स्थापना हुई।

सैनेटोरियम के लिए भूमि तलाशी गई। किशोरवन के स्व. लाड़िली किशोर गोस्वामी ने अटलवन (अटल्ला) पर अपनी भूमि दान दी। काफी हो हल्ला के बाद ब्रज सेवा समिति टी.बी. सैनेटोरियम सेठ रामसुखदास परशुराम पुरिया इसके अध्यक्ष बने। बाबूजी ने उपाध्यक्ष पर स्वीकार किया। हरगूलाल जी, प्रहलाददास परशुराम पुरिया, ललामजी सदस्य रहे। मेरी भी अवैतनिक सेवायें कार्यलय में जी गयी और उपप्रबन्धकीय कार्य सोंपे गये। निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। कुछ समय पश्चात् सैनेटोरियम भवन बनकर तैयार हो गया।

श्री गुप्त जी एक वर्ष किशोरी रमन इण्टर कालेज, मथुरा, एक वर्ष राधाबिहारी इण्टर कालेज, बरसाना, तीन वर्ष प्रेम महाविद्यालय इण्टर कालेज, वृन्दावन, तीन वर्ष हमारीमल सोमानी नगर पालिका इण्टर कालेज, वृन्दावन तथा इसके बाद दस वर्ष चम्पा अग्रवाल इण्टर कालेज, मथुरा में प्रधानाचार्य रहे। आप ब्रज आदर्श इण्टर कालेज, माँट के संस्थापक सदस्यों में से थे। एक बार के.आर. इण्टर कालेज में नये आये निरीक्षक ने प्रधानाचार्यों की बैठक बुलाई जिसमें श्री गुप्त भी उपस्थित थे। जिला विद्यालय निरीक्षक ध्यान से प्रधानाचार्यों की समस्याओं को नहीं सुन रहे थे। श्री गुप्त ने खड़े होकर ''मि. इन्सपेक्टर कहा और बोले हू विल हीयर आवर ग्रीवान्सेज''। सभा कक्ष में सभी अवाक रह गये और जिला विद्यालय निरीक्षक बंगलें झांकने लगे। वे अधिकारियों को जनता का सेवक समझकर आड़े हाथ लिया करते थे।

सन् 1924 में मैंने एल.टी. की थी, उसके बाद मेरा नाम डिप्टी इन्सपैक्टरी में आया। मैंने उन्हें बताया, बोले बधाई, इससे अच्छा तुम किसी जूनियर हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक हो जाआ। डिप्टी इन्सपेक्टरी तो चपरासी गिरी है। यहाँ–वहाँ भागते फिरोगे। ऐसा था उनका निश्चल प्रेम और सही मार्ग दर्शन। सन् 1965 में मैंने सुबटी देवी अग्रवाल शिशु सदन की स्थापना की और इसे जूनियर हाई स्कूल कराया। इस कार्य से वह आजीवन बहुत प्रसन्न रहे।
सन् 1967 में उक्त विद्यालय में प्रधानाचार्य पद पर प्रधानाचार्य बी.डी. गोयल के पूज्य पिता स्व. राधेश्याम अग्रवाल प्रबन्धक ने उक्त विद्यालय में मेरी नियुक्ति की।

वृन्दावन बिजली कम्पनी के तत्कालीन इंजीनियर राम निवास अग्रवाल ने पब्लिक जूनियर हाईस्कूल के प्रबन्धक अध्यक्ष स्व. षाह गौरषरण गुप्त से मेरी सेवायें स्थानान्तरित करायी। यह सब बाबूजी के निर्देष पर चलता रहा । सभी महानुभव उनसे परामर्ष करते रहते थे। जब बाबूजी की नियुक्ति चम्पा अग्रवाल इण्टर कालेज, मथुरा में हुई तो उन्होने मेरे अनुज राधाबल्लभ अग्रवाल को कालेज भेजने का आदेष दिया। मैने कहा उनकी नियुक्ति अमेरिकन फाउण्डेषन में फरीदाबाद हो गयी है। वह वहाँ चला गया है। श्री गुप्त उनके एकाउण्टस कार्य से प्रभावित थे, जिसे टी. बी सैनेदोरियम में वह देख चुके थे। सैनेटोरियम के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वसु चौधरी ने भी उसके कार्य की प्रषंसा उनसे की थी। मुझे उसे फरीदाबाद से बुलाना पड़ा और चम्पा अग्रवाल इण्टर कालेज पड़ा। बाबूजी व्यक्ति के कार्य और व्यवहार की परख बड़ी तीव्रता से करते थे।

हजारीमल सोमानी नगर पालिका इण्टर कालेज में जब उनकी नियुक्ति नगर पालिका बोर्ड में हुई, उसके अध्यक्ष व कालेज प्रबन्धक स्व. रामजीलाल सिंह गहलौत उन्हें लेकर कालेज की ओर बढ़े। किसी ने आकर सूचना दी कि कार्यवाहक प्रधानाचार्य घर चले गये है। सब स्तब्ध, उन्हें चार्ज कैसे दिलाया जाय नागरिक तथा कर्मचारी स्वागत में व्यस्त थे। मैने गहलौत जी से कहा आफिस खुला है । स्टाफ उपस्थित है। आप चलकर आसन ग्रहण कराइये और स्टाफ में घोशणा करिये। वैधानिकता कल पूरी हो जायगी। मेरे पीछे खड़े बाबू स्व. किषोरी लाल षर्मा ने मेरी पीठ थपथपाई और गहलौत जी से कहा ठीक है। कालेज जाकर यही हुआ। स्टाफ की ओर से श्रद्वेय प्रो. रघुनाथ लवांनिया ने श्री गुप्त का स्वागत किया । भारी भीड़ उस समय उपस्थित थी।

दो बार एम. एल. सी. होन के बावजूद उनका सार्वजनिक क्षेत्र का परिचय अछूता था। उनसे मिलने आने वाला हर सख्स कहता था कि उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें नहीं जानता इसके लिए कुछ नागरिकों जैसे स्व. राधारमन ड्रगिस्ट, रामजीलाल सौदागर, मददी सेठ गौषाला वाले और हितशरण सर्राफ तथा लेखक रामगोपाल गुप्त को मिलवाना पड़ता था और काम आनन– फानन में हो जाया करता था अध्यापकों का परिचय भी श्री फनीलाल गोस्वामी, स्व. हरीष राठी आदि को कराना पड़ता था।

मथुरा जनपद की षिक्षण एवं सामाजिक संस्थाओं की स्थापना, मान्यता आदि दिलाने में उनका योगदान रहा। जैसे ब्रज चिकित्सा संस्थान, बी. एस. ए. कालेज, सुबटी देवी स्कूल आदि। स्काउटिंग में भी वह प्रादेशिक कमिश्नर (अर्थ) रहे। एक अधिवेशन में 'इलाहाबाद उनके साथ मुझे तथा स्व. दुर्गाप्रसाद गुप्त पूर्व प्रधानाचार्य सोमानी इण्टर कालेज को अवसर मिला। इम दोनों के पास एक–दो ब्रीफकेस और उनके साथ एक अटैची तथा तीन बड़े बक्से थे। कैण्ट स्टेशन प रवह बोले अभी आता हूँ, गाड़ी आने पर सामान चढ़ाना। मैंने दुर्गा प्रसाद जी से कहा ये कितने कपड़े और अन्य सामान ले जा रहे हैं, क्या करेंगे। श्री गुप्त बोले अध्यापकों की फाइले होंगी। कितना काम किनती व्यस्तता का अंदाज मुझे उस दिन लगा। वहाँ स्व. श्रीमती गायत्री गुप्ता से भेंट हुई और उनका पहला प्रश्न था ''बाबूजी'' आये मैंने कहा –हाँ।

चम्पा अग्रवाल इण्टर कालेज में आयोजित एक स्काउट कार्यक्रम में इलाहाबाद से अपर शिक्षा निदेशक आर.एस. जौहरी आये। उनके आग्रह पर ब्रज का एक रसिया स्वामी मेघश्याम (पूज्य पिता पद्म श्री स्वामी रामस्वरूप शर्मा) ने सुनाया। वृन्दावन लक्ष्मण शहीद स्मारक भवन में डॉ. बरचर्ड (मेडीकल सुपरिनटेनडेन्ट सी. एफ.सी.) की विदाई पर उन्हीं के आदेश पर विदाई पत्र पढ़ा जिसकों अंग्रेजी में ''बाबूजी में'' ने समझाया। उसकी दो पंक्ति ''जाओ देवि याद करेंगे, ये कृतज्ञ भारतवासी। तेरा ये क्रिश्चियन मिशन स्तम्भ खड़ा है अविनाशी'' से प्रभावित होकर उसकी मूल प्रति डा. बरचर्ड साथ ले गयीं। सैनेटोरियम के चिकित्सा अधीक्षक डॉ वसु चौधरी के विदाई समारोह में भी बाबूजी के आदेश पर विदाई पत्र पढ़ा, जिसकी मूल प्रति वे ले गये। श्री गुप्त की दोनों पुत्रियों श्रीमती सुमन और बीना के विवाह समारोह में अभिनन्दन पत्र उन्होंने मुझसे पढ़वाया। ''बाबूजी'' के दोनों पुत्र अशोक अरै अनिल बाहर पढ़े थे। उनकी फीस आदि उस समय के वेतन से भेजना कितना कठिन था जिसे पहला कर्त्तव्य वह समझते थे। इन दोनों

की शादियों में आगरा में अभिनन्दन पढ़वाना उनकी साहित्य और संगीत की रूचि को प्रकट करता है।